This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

461

B.A. (Programme) / I **B**

HINDI DISCIPLINE – Paper I

हिन्दी अनुशासन – प्रश्नपत्र I

(हिन्दी कविता, नाटक तथा हिन्दी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये / NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 75**

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी : प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी A) के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं । तथापि ये अंक, NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे ।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई परै, स्यायु हरित-दुति होइ ।।
नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ ।।

(ख) भिक्षा नहीं माँगता हूँ
आज इन प्राणों की
क्योंकि, प्राण जिसका आहार, वही इसकी
रखवाली आप करता है, महाकाल ही,
शेर पंचनद का प्रवीर रणजीत सिंह
आज मरता है देखो,
सो रहा है पंचनद आज उसी शोक में ।

(ग) आँखें अलियों-सी
किस मधु की गलियों में फँसीं,
बंद कर पाँखें
पी रही हैं मधु मौन
या सोईं कमल-कोरकों में ?
बंद हो रहा गुञ्जार –
जागो फिर एक बार ! 8 + 8

2. तुलसीदास **अथवा** निराला का साहित्यिक परिचय लिखिए । 7

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित काव्यांशों के आधार पर किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) बिहारी 'गागर में सागर' भरने वाले कवि हैं । बिहारी के दोहों के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए ।

(ii) वृंद के दोहों में प्रतिपादित नीति-सम्बन्धी विचारों को अभिव्यक्त कीजिए ।

(iii) 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' कविता का उद्देश्य लिखिए ।

(iv) 'भिक्षुक' कविता के आधार पर निराला की यथार्थवादी चेतना को स्पष्ट कीजिए । 6 + 6

4. किसी **एक** अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जैसे तुमसे बाहर जीवन की गति ही नहीं है । तुम्हीं तुम हो और कोई नहीं हैं । परन्तु समय निर्दय नहीं है । उसने औरों को भी सत्ता दी है । अधिकार दिये हैं । वह धूप और नैवेद्य लिए घर की देहली पर रुका नहीं रहा । उसने औरों को अवसर दिया है । निर्माण किया है । ..... तुम्हें उसके निर्माण से वितृष्णा होती है ? क्योंकि तुम जहाँ अपने को देखना चाहते हो, नहीं देख पा रहे ?

अथवा

नहीं, तुम अनुमान नहीं लगा सकते । तुमने लिखा था कि एक दोष गुणों के समूह में उसी तरह छिप जाता है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक; परन्तु दारिद्रय नहीं छिपता । सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता । नहीं, छिपता ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है - एक-एक करके नष्ट कर देता है । 8

5. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के कथानक की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की नायिका आप किसे समझते हैं, उसका चरित्र चित्रण कीजिए । 12

6. (क) सन्त काव्य धारा **अथवा** रीतिकाल की विशेषताएँ बताइए । 10

(ख) भारतेन्दु युग **अथवा** प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये । 10